International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 11, November- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

जनसंख्या विस्फोट एवं पर्यावरण प्रदूषण

डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़
सहायक आचार्य,
अहिंसा एवं शांति विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान,
लाडनूं (राजस्थान)

डॉ विकास शर्मा
सहायक आचार्य,
अहिंसा एवं शांति विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान,
लाडनूं (राजस्थान)

मानव जनसंख्या एवं पर्यावरण का परस्पर बहुत गहरा सम्बन्ध है। अनुकूल पर्यावरण में ही मानवीय जनसंख्या का विकास संभव है। विश्व जनसंख्या की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति होती है केन्द्रीकरण सीमित प्रदेशों में जनंसख्या का जमाव अर्थात् जहां भी उपयुक्त पर्यावरण होता है वहीं जनसंख्या का केन्द्रीकरण होने लगता है। जनसंख्या वितरण के स्थानीय दृष्टिकोण के अनुसार विश्व की 90 प्रतिशत जनसंख्या उत्तरी गोलार्द्ध में तथा शेष 10 प्रतिशत जनसंख्या दक्षिणी गोलार्द्ध में पायी जाती है जिसका मुख्य आधार स्थलीय वितरण है।

जनसंख्या वृद्धि अब जनसंख्या विस्फोट का रूप ले चुकी है। एक अनुमानानुसार विश्व संख्या आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व 300 मिलियन से भी कम थी। 1850 तक यह 1000 मिलियन (1 बिलियन) थी, 75 वर्षों में बढ़कर यह 20,000 मिलियन हुई। 1960 से 1975 ई. के 15 वर्षों में यह 5,000 मिलियन हो गई। सन् 2000 में विश्व जनसंख्या 6,055 मिलियन रही। भारत की जनसंख्या तो एक अरब को पार कर चुकी हैं। यह विश्व की जनसंख्या का 16.87 प्रतिशत है। जबकि हमारे देश का क्षेत्रफल कुल विश्व क्षेत्रफल का मात्र 2.4 प्रतिशत ही है। पिछले दशक के दस वर्षों में 18 करोड़ की जनवृद्धि चिंता का विषय है।

Scanned by CamScanner

जनसंख्या का पर्यावरण एवं परिस्थितिकी से गहरा सम्बन्ध होता है। अर्थात् जनसंख्या अधिक होगी तो पर्यावरणीय शोषण अधिक होगा और अंत में आकर्षित पर्यावरण परिस्थितिकी संकट का कारण हो सकता है। जनसंख्या वृद्धि अब जनसंख्या विस्फोट का रूप ले चुकी है। जनसंख्या का आशय उस स्थिति से है जिसमें आर्थिक विकास के कारण मृत्यु दर में तो गिरावट आती है लेकिन जन्म दर उच्च होने के कारण जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होती है। इस स्थिति को ही जनसंख्या विस्फोट कहते हैं।2 जनसंख्या का भार पर्यावरण पर निरंतर बढ़ता जा रहा है। मानव निर्मित सांस्कृतिक और पारिवारिक ढांचा आज चरमरा गया है। टिकाऊ मूल्यों को आज छोड़ देने से समस्त संतुलन डगमगा गये हैं।

भारत में 1950 से ही जनसंख्या मृत्यु दर तेजी से व बराबर घटने तथा परिवार कल्याण कार्यक्रम एवं अन्य प्रयासों के बावजूद जन्म दर के बढ़ने से जनसंख्या की अनुमानित वृद्धि अधिक रही है। 1951 से 1991 के मध्य जनसंख्या की अनुमानित वृद्धि 2.3 गुना से अधिक रही है। इसी प्रकार निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या की न्यूनतम आवश्यकताओं के आधार पर ही लगभग अढ़ाई गुना अधिक सभी प्रकार की वस्तुओं की या भौतिक पदार्थों की आवश्यकता अधिक होगी। वस्तुओं की मांग के क्षेत्र में तीन से चार गुनी एवं विकसित एवं उन्नत तकनीक से निर्मित यांत्रिक उपकरणों की आवश्यकता में और अधिक तेजी से मांग बढ़ रही है। ऐसी मांग निरन्तर बढ़ती रही है। यही नही, देश में सर्वाधिक सर्वाधिक स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए व सिर्फ प्राथमिक उपयोग की वस्तुओं का ही बल्कि सभी प्रकार की निर्मित वस्तुओं का उत्पादन भी बहुत तेजी से बढ़ रहा है। हमारी उपभोक्ता वस्तुओं का वर्तमान का उत्पादन मात्र आज की आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए पर्याप्त है।3

आज विश्व की जनसंख्या तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। प्रति सैकण्ड 30 में दुनिया में 117 शिशुओं का जन्म होता है और लगभग 46 व्यक्तियों की मृत्यु अर्थात् वास्तविक वृद्धि 71 की होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो प्रतिदिन 2,00,000 व्यक्तियों की या प्रतिवर्ष 7.5 करोड़ जनसंख्या वृद्धि हो जाती है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार विश्व की वर्तमान जनसंख्या 600 करोड़ के करीब है। जिसमें अगर इसी गति से वृद्धि होती रही तो विश्व की जनसंख्या 2010 की 700 करोड़ पहुंच जायेगी। 2001 की

Scanned by CamScanner

जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 102.7 करोड़ थी। अर्थशास्त्री ऐसा मानते हैं कि अगर वर्तमान गति से जनसंख्या वृद्धि होती रही तो 2050 तक भारत विश्व का सबसे बड़ा जनसंख्या वाला देश हो जाएगा।

किसी देश के नागरिक उसकी सबसे बड़ी सम्पत्ति और संसाधन हैं। लोग ही किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करते हैं और उससे सम्पत्ति अर्जित करते हैं। अगर किसी देश में जरूरत से कम जनसंख्या है तो उसके प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण रूप से प्रयोग नहीं हो पाता। जैसे अनेक देशों को किसी दूसरे देश से बुलाये किराये के मजदूरों पर निर्भर रहना पड़ता है। जैसा कि खोज और विकास की प्रारंभिक स्थितियों में हम अमेरिका और आस्ट्रेलिया के संदर्भ में पाते हैं। दूसरी ओर किसी देश में क्षमता से अधिक जनसंख्या है तो यह एक तरह का अभिशाप है और उस देश की प्राकृतिक सम्पदा पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि किसी देश में अगर उसकी क्षमता के अनुपात में जनसंख्या है तो यह उसकी सबसे बड़ी सम्पत्ति है। आज वर्तमान भारत की तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या एक विस्फोट का रूप ले चुकी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की जनसंख्या तीव्रगति से बढ़ी है। विगत दशक 1991–2001 के आंकड़ों के अनुसार देश की जनसंख्या 21.34 प्रतिशत बढ़ी है।

जनसंख्या वृद्धि से सम्बन्धित कुछ तथ्य निम्न प्रकार हैं–

विश्व में प्रत्येक छठा व्यक्ति भारतीय था और 21वीं शताब्दी के प्रारंभ में हर पांचवां व्यक्ति भारतीय है। प्रतिवर्ष भारत की जनसंख्या में बढ़ोतरी एक आस्ट्रेलिया के बराबर और प्रति दस वर्ष में एक यूरोप के बराबर हो जाती है।

- भारत की वर्तमान जनसंख्या वृद्धि दर लगभग 1.9 प्रतिशत है और चीन की वृद्धि दर 1.2 प्रतिशत है। यही दर उसके चीन से आगे बढ़ाकर विश्व में पहले स्थान पर ले आयेगी।
- भारत में जन्मदर बढ़ रही है और मृत्यु दर घट रही है।

Scanned by CamScanner

- भारत में जनसंख्या घनत्व 1901 में 72 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर थी तथा 1991 में बढ़कर 267 तथा 2001 में यह घनत्व 324 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि.मी. हो गया है। क्या इस अनुपात में संसाधन बढ़े हैं?
- भारत में औसत आयु प्रति व्यक्ति 1911 में तो 24 वर्ष थी जो 1991 में 55.1 वर्ष हो गई और 2001 में जीवन आयु 62.9 वर्ष लगाई गई है।
- भारत में आधे से अधिक लोग साक्षर हैं। साक्षरता का प्रतिशत 2001 की जनगणना के अनुसार 65.38 प्रतिशत था। पुरुषों की साक्षरता प्रतिशत 75.85 प्रतिश है तथा स्त्रियों का 54.16 था।
- भारत की ग्रामीण जनसंख्या 72.21 प्रतिशत है तथा नगरीय जनसंख्या 27.78 प्रतिशत है 2001 के अनुसार।4

किसी भी देश की जनसंख्या का घनत्व, बनावट और गुण उस देश की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित करता है। उसकी प्रगति को निर्धारित करने में यह महत्त्वपूर्ण कारक है। अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि विस्फोट के लिए उत्तरदायी है। जनाधिक्य, साम्राज्यवाद, गरीबी, बेरोजगारी, अपराध, पारिवारिक कष्ट एवं विघटन को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जन्म देने के लिए उत्तरदायी है। देश के आर्थिक विकास की गति में बढ़ती जनसंख्या बाधक रही है।

जब जनसंख्या वृद्धि अनियंत्रित हो जाती है तो जन्मदर और मृत्युदर के बीच दरार चौड़ी होती रहती है तो समाज में कठिनाइयों का दौर प्रारंभ हो जाता है। सामाजिक समस्याएं विकराल रूप ले लेती है, अपराध बढ़ जाते हैं। आम नागरिक को रोटी, कपड़ा और मकान एक दुःस्वप्न लगने लगता है। नगरों की जनसंख्या में वृद्धि हो जाती है, गंदी बस्तियां उत्पन्न होने लगती हैं, स्वास्थ्य सेवाएं चरमराने लगती हैं, पीने के पानी की कमी, भूमिगत जलस्तर नीचा चला जाता है। सभी सुविधाएं मुहैया करना दुष्कर हो जाता है।

जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले मुख्यतः तीन कारक उत्तरदायी हैं–1. जन्मदर, 2. मृत्युदर 3. आवास–प्रवास। सामान्य रूप से प्रत्येक देश का 33 प्रतिशत स्थल भाग जंगल से ढका रहना चाहिए

Scanned by CamScanner

ताकि पर्यावरण संतुलन बना रहे। लेकिन जनसंख्या के दबाव के कारण जंगलों को काटकर खेत व आवासीय कालोनियां बसाई जा रही है। इसी कारण आज भारत का 19.47 प्रतिशत भाग ही जंगलों से ढका हुआ है। इसके कारण भू–अपरदन, रेगिस्तान का विस्तार व कई अन्य प्राकृतिक आपदाएं हमें झेलनी पड़ रही हैं।

हमने भारत में जनसंख्या वृद्धि के विभिन्न दशकों के आंकड़ों का अवलोकन किया। साथ ही यहां की जन्मदर, मृत्युदर एवं आवास–प्रवास के तथ्यों का विश्लेषण किया। ये सारे तथ्य इस बात के द्योतक हैं कि भारत में प्रतिवर्ष जनसंख्या वृद्धि बड़ी तेजी से हो रही है जिसने हमारे आर्थिक विकास, प्रशासन, सामाजिक कल्याण आदि को प्रभावित किया है। इसलिए कहा जाता है कि भारत में जन विस्फोट हो रहा है और यदि इसे समय रहते नियंत्रित नहीं किया गया तो इसके भयंकर परिणाम होंगे। भारत में इस जन विस्फोट या दूसरे शब्दों में अनियमित जनसंख्या वृद्धि के लिए अनेक उत्तरदायी कारक हैं।

मानव का स्वास्थ्य पर्यावरण से अत्यधिक रूप से सम्बन्धित है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ पर्यावरण आवश्यक है। प्रारंभ में पर्यावरण एक लम्बी अवधि तक स्वच्छ, संतुलित एवं प्रदूषण विहीन रहा। उसके पश्चात् स्वच्छ एवं अच्छे जीवन एवं सुख–सुविधाओं की खोज में मनुष्य के क्रियाकलापों, औद्योगिकीरण, शहरीकरण एवं जनसंख्या वृद्धि के कारण पर्यावरण असंतुलित होता चला गया। मनुष्य के आधुनिक जीवन ने मनुष्य के स्वास्थ्य को प्रभावित किया। पर्यावरण की गुणवत्ता में तीव्र गति से होने वाली जनसंख्या वृद्धि के कारण भी कमी आई है। जनसंख्या वृद्धि के कारण मनुष्य की आवश्यकताओं में वृद्धि ने प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण, अनियंत्रित दोहन किया जिससे पर्यावरण का नाश हुआ।5

प्राकृतिक नदी, नालों के मार्ग में ईमारतों का बनना व उनके मार्गों को अवरूद्ध करने का परिणाम कई बार झेल चुके हैं। इसका ताजा उदाहरण जयपुर का रामगढ़ बांध, उदयपुर की झीलें, यमुना का क्षेत्र पर्यावरण के नाश के रूप में हम देख सकते हैं कि आज जितने भी पर्यावरणीय प्रदूषण व प्राकृतिक आपदाएं हो रही हैं उनके पीछे कहीं न कहीं मानव व मानव की जनसंख्या का कारण है। इसलिए

Scanned by CamScanner

गांधीजी ने कहा–''यह पृथ्वी मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है लेकिन किसी के लालच की नहीं।'' इससे साफतौर पर यह सिद्ध होता है कि इस पृथ्वी को नष्ट करने व पर्यावरण को प्रदूषित करने में मनुष्य का लालच ही सबसे प्रमुख है। इसका परिणाम वह देख रहा है।

संदर्भ सूची

1. डा. कमला विशिष्ट, पर्यावरण शिक्षा, यूनिवर्सिटी बुक हाऊस प्रा.लि., जयपुर, पृ. 10, संस्करण 2007
2. पर्यावरण शिक्षा, डा. सी.एम. गुप्ता, डा. रेनू शर्मा, आस्था प्रकाशन, जयपुर, पृ. 54, संस्करण 2007
3. दीप्ति शर्मा, महेन्द्र शर्मा, पर्यावरण विश्वकोश (4), अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ. 286, संस्करण 2009
4. दीप्ति शर्मा, महेन्द्र शर्मा, पर्यावरण विश्वकोश (5), अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ. 72, संस्करण 2009
5. डा. एस.एम. सक्सेना, डा. सीमा मोहन, पर्यावरण अध्ययन, कैलाश पुस्तक सदन, पृ. 288, संस्करण 2007

Scanned by CamScanner